

वी.सी.डी 887, सिहोर वार्तालाप (एम.पी), ता: 8.3.08  
Disc. in VCD No.887 dated 8.3.08 at Sehore (Madhya Pradesh)

जिज्ञासू – बाबा, बाप ने भी असली यज्ञ रचा है और मनुष्य भी यज्ञ रचते हैं। तो इसमें अंतर क्या है?

बाबा – मनुष्य यज्ञ रचते हैं मटेरियल। वो स्थूल मटेरियल स्वाहा करते हैं। और बाप बच्चों से मटेरियल यज्ञ नहीं करवाते। संकल्पों को स्वाहा करो। विकारों को स्वाहा करो। अपनी कमियों को स्वाहा करो। अवगुणों को स्वाहा करो। देहअभिमान को स्वाहा करो। तो बहुत बड़ा अंतर हो गया। 2500 साल हो गए यज्ञ करते-करते। मटेरियल स्वाहा करते-करते। दुनियाँ में फर्क पड़ा या दुनियाँ नीचे गिरती गई? क्या हुआ? दुनियाँ नीचे गिरती गई। तो संकल्प बीज है। उस बीज का अगर परिष्कार कर लिया। तो सब ठीक हो जावेगा। इसलिए कहते हैं ब्रह्मा ने संकल्पों से सृष्टि रची। तो क्या दुष्ट संकल्पों से सृष्टि रची या श्रीमत के अनुकूल संकल्पों से सृष्टि रची? श्रीमत के अनुकूल जो संकल्प किए गए उनसे नई सृष्टि रची गई।

**Student:** Baba, the Father has organized a true *yagya* and human beings organize *yagyas* too. So, what is the difference between them?

**Baba:** Human beings organize material *yagya*. They sacrifice physical materials (in the sacred fire). And the Father does not ask children to organize material *yagya*. (He says:) sacrifice the thoughts. Sacrifice the vices. Sacrifice your shortcomings. Sacrifice your bad qualities. Sacrifice your body consciousness. So, there is a very big difference (between both kinds of *yagya*). We have been organizing *yagyas*, sacrificing materials for 2500 years. Did it bring about any difference in the world or did the world continue to witness downfall? What happened? The world continued to experience downfall. So, the thought is the seed. If you purify that seed, then everything will be all right. That is why it is said that Brahma created a world through his thoughts. So, did he create the world through wicked thoughts or did he create the world through the thoughts created in accordance with *Shrimat*? The new world was created through the thoughts that were created in accordance with the *Shrimat*.

समय – 1.57

जिज्ञासू – बाबा बाहर जो ईविल सोल शरीर छोड़ रही हैं। तो क्या वो भी ब्राह्मण बच्चों में प्रवेश होगी?

बाबा – ईविल सोल शरीर छोड़ती है?

जिज्ञासू – हाँ, बाहर की दुनियाँ में।

बाबा – कि शरीर छोड़ने के बाद वो ईविल बन जाती है? सूक्ष्म शरीरधारी दूसरों में प्रवेश करके तंग करते हैं। हाँ तो?

जिज्ञासू – तो क्या वो भी ब्राह्मण बच्चों में प्रवेश करती है?

**Time:** 1.57

**Student:** Baba, will the evil souls that are leaving their bodies outside also enter the Brahmin children?

**Baba:** Do the evil souls leave their bodies?

**Student:** Yes, in the outside world.

**Baba:** Or do they become evil after leaving the body? The subtle bodied souls enter others and trouble them. Yes, so?

**Student:** So, do they also enter the Brahmin children?

बाबा – देवता धर्म की आत्माएँ ही और-और धर्मों में हिन्दू बनकरके कनवर्ट होती रहीं। उनमें दो प्रकार की आत्मायें हैं। एक वो हैं जो टोटल आधीन हो गई विधर्मियों के। और एक वो है जो सिर्फ प्रभावित तो हुई थोड़ा; लेकिन उनके आधीन नहीं हुई। जैसे सूर्यवंशी, चंद्रवंशी आत्मायें हैं जो अपने धर्म की पक्की हैं। वो अपने धर्म पर पक्की रही अंत तक नम्बरवार पुरुशार्थ अनुसार। कनवर्ट नहीं हो पाई। उनकी संख्या बहुत थोड़ी है। जैसे झाड़ में तना दिखाया गया है नीचे से लेकर ऊपर तक। एक सीध में है।

**Baba:** It is the souls of the Deity religion only, who became Hindus and continued to convert to the other religions. Among them there are two kinds of souls. One are those who became totally dependant on the *vidharmis* (those who have inculcations opposite to that said by the Father) and the others are those who were only influenced a little, but did not become dependant upon them. For example the *Suryavanshis* (of the Sun dynasty), the *Chandravanshi* souls (of the Moon dynasty), who are firm in their religion. They remained firm in their religion till the end, numberwise according to their special effort for the soul (*purusharth*). They did not convert. They are very few in number. For example, the stem has been shown in the tree from the bottom to the top. It is in a straight line.

और कुछ दूसरी डालियाँ हैं जो दायीं ओर मुड़ गई, कुछ बायीं ओर मुड़ गई। विदेशी धर्मों में कनवर्ट हो गई; क्योंकि द्वापर से आने वाले द्वैतवादी धर्म पितायें हैं जिन्होंने श्रीमत के बरखिलाफ अपनी मत मिक्स करके नए-नए धर्म स्थापन किए। उनके प्रभाव में आने वाले सब भूत, प्रेत बन जाते हैं। सब सूक्ष्म शरीरधारी बनते हैं; क्योंकि कर्म, अकर्म, विकर्म की सही गति समझाने वाला परमपिता परमात्मा के सिवाए और कोई धर्मपिता नहीं है। इसीलिए वो आत्मायें अनेक जन्म पाप कर्म करने वाली हैं। पापों का बोझा बहुत बढ़ जाता है। तो उनको अपना शरीर नहीं मिलता। और दूसरों के शरीर में प्रवेश करके पाप करती-कराती रहती हैं।

And there are some other branches, which have turned to the right side, some turned to the left side, they converted into the foreign religions because the dualistic religious fathers who come from the Copper Age, those who established new religions against the *Shrimat* by mixing their own opinions.... all those who are influenced by them become ghosts and spirits. All of them become subtle bodied because no religious father other than the Supreme Father Supreme Soul can explain the true dynamics of *karma*, *akarma* and *vikarma* (opposite deeds). That is why those souls are the ones who commit sins for many births. When the burden of sins increases very much, they do not get their body and they enter the bodies of others and keep committing sins and making them to commit sins.

समय – 5.38

जिज्ञासू – बाबा, ब्रह्मा ने जो तीन बार सृष्टि रची और बिगाड़ दी। तो वो सृष्टि सात्विक संकल्पों से रची गई थी?

बाबा – ऐसे तो दुनियाँ में कोई भी चीज़ हो, कोई भी चैतन्य हो, जड़ हो, जंगम हो। चार अवस्थाओं से पसार होने के बाद उसका रूप बदलता ही है। सृष्टि भी चार

अवस्थाओं से पसार होती है। उसके बाद फिर पुराने से नई बन जाती है। ब्रह्मा के लिए भी यही बात लागू होती है कि उन्होंने सृष्टि का निर्माण किया। तो सारी सृष्टि की जो भी आत्मायें हैं वो चार वर्गों में बांटी हुई हैं। ब्राह्मण सो देवता एक वर्ग। फिर क्षत्रीय, फिर वैश्य, फिर शूद्र। फिर परिवर्तन होता है। तो ब्राह्मण सो देवता बन जाते हैं।

**Time: 5.38**

**Student:** Baba, Brahma created the world thrice and then destroyed it. So, was that world created through true (*satvik*) thoughts?

**Baba:** In a way, whatever thing exists in this world, whether it is living, non-living or moving, when they pass through the four stages, their form definitely changes. The world also passes through four stages. After that it again transforms from old to new. The same thing applies to Brahma as well when he created the world. So, all the souls of the entire world are categorised into four categories. One category is of those who transform from Brahmins to deities. Then *Kshatriya*, then *Vaishya*, then *Shudra*. Again the transformation takes place and Brahmins transform to deities.

तो जो आखिरी वर्ग है ब्राह्मण सो देवता बनने का। वो तो चौथा आयाम है सफलता प्राप्त करने का। बाकी जो तीन आयाम गए। देवता वर्ण की शूटिंग। क्षत्रिय वर्ण की शूटिंग। और वैश्य वर्ण की शूटिंग। इनमें अति नहीं हुई। इसलिए अंत नहीं हुआ। इसलिए गाया हुआ है ब्रह्मा के द्वारा तीन बार सृष्टि रची गई। संकल्पी सृष्टि है। चौथी बार में अति हो जाती है। और अंत हो जाता है। नई सृष्टि आगमन हो जाती है।

So, the last category of the ones who transform from Brahmins to deities is the fourth dimension of achieving success. As regards the remaining three dimensions, the shooting of the deity category, shooting of the *kshatriya* (warrior) category, and the shooting of the *vaishya* category. It did not reach the extreme level. That is why the end (i.e. destruction) did not take place. That is why it is famous that Brahma created the world thrice. He created a world of thoughts. The situation reaches the extreme level in the fourth time and then the end (i.e. destruction) takes place. The new world arrives.

जिज्ञासू – बाबा तो बिगाड़ने का कारण क्या हुआ? संकल्प तो सात्विक थे। बाबा – अति हुई नहीं तो अंत हुआ ही नहीं। कोई चीज पकने के लिए, जैसे सोना है। सोना जब तक पूरी तीव्र अग्नि में नहीं डाला जाएगा। तब तक उसका रूप परिवर्तन नहीं होता है। ऐसे ही तीन बार जो शूटिंग होती है सृष्टि परिक्रिया की, वो परिपूर्ण स्टेज में नहीं हो पाती। और ये भी बात है कोई काम किया जाता है। असफलता मिलती है। तो अनुभव हो जाता है। एक बार भी अनुभव दूसरी बार भी अनुभव तीसरी बार भी अनुभव। अनुभव ये कहता है कि सृष्टि पसंद नहीं आई। तो बिगाड़ते गए। जब तक अति न हो तब तक अंत होता ही नहीं।

**Student:** Baba, so what was the reason for destroying it? The thoughts were true (*satwik*).

**Baba:** As the extreme level was not reached, the end did not take place at all. For anything to ripen, for example, gold; until the gold is put into extremely hot fire, its form does not change. Similarly, the shooting of the world process that takes place thrice does not take place in a complete stage. And it is also the case that when we attain failure in the work we

do, we become experienced. We experience it once, we experience it the second time, we experience it the third time. The experience says that he (Brahma) did not like the world. So, he went on destroying it. Until it reaches the extreme level, the end does not take place at all.

जिज्ञासू – बाबा फिर मोर का जो मिसाल दिया है कि वो तीन बार उड़ान भरता है। तो क्या वो ब्रह्मा के साथ टैली होता है या फिर वो किसके लिए?

बाबा – एक प्रश्न आया कि मोर तीन बार उड़ान भरता है। ये मिसाल किसका है? मोर पंख पवित्रता का सूचक माना जाता है। वो मोर पंख देहअभिमान की पूँछ है। देखने में भी बड़ी सुंदर लगती है। उस पूँछ से डांस भी बहुत सुंदर करता है; लेकिन उड़ते समय उँची उड़ान करते समय वो पूँछ भारी पड़ जाती है। तो ज्यादा से ज्यादा वो तीन बार उड़ान उड़ता है। उसके बाद उड़ान नहीं भरता।

**Student:** Baba, then the example of peacock is given that it makes three attempts to fly; so, does it tally with Brahma or with whom?

**Baba:** A question has emerged; the peacock makes three attempts to fly. Whose example is it? A peacock feather is considered to be an indication of purity. That peacock feather is a tail of body consciousness. It appears very beautiful as well as it dances very nicely with that tail, but while trying to fly high that tail becomes heavy. So, at the most it makes three attempts to fly. After that it does not make attempt to fly.

शूटिंग से कनेक्टेड बात है। सतयुगी शूटिंग में तो संगमयुगी कृष्ण की उड़ान भरने की बात ही नहीं क्योंकि पढ़ाई पूरी नहीं होती है। बाकी सतयुगी शूटिंग जब पूरी हो जाती है। तो बेसिक नॉलेज की पढ़ाई ही पूरी हो जाती है। जो बोला है आत्मा की सारी कट उतरने पर तुम डायरेक्ट बाप से सीखते हो। तो वहाँ से पढ़ाई शुरू होती है। उड़ान शुरू होती है। तो तीन युगों में तीन प्रकारे की उड़ानें हैं। त्रेतायुगी शूटिंग, द्वापरयुगी शूटिंग, कलियुगी शूटिंग और तीन बार उड़ान भरने के बाद मयूर अपने लक्ष को प्राप्त कर लेता है। फिर बार-बार उसे उड़ान भरने की दरकार भी नहीं है। तो ये संगमयुगी कृष्ण की बात है या सतयुग में पैदा होने वाले कृष्ण की बात है? संगमयुगी कृष्ण की बात है।

It is a subject connected to the shooting. During the Golden Age shooting, there is no question of the Confluence Age Krishna making an attempt to fly at all, because the study does not get over. As for the rest when the Golden Age shooting is completed, then the study of the basic knowledge finishes, for which, it has been said that when the entire rust of the soul is removed, you learn directly from the Father. So, the study begins from there. The flight begins from there. So, in all the three Ages there are three kinds of flights. (In) the Silver Age shooting, in the Copper Age shooting, in the Iron Age shooting and after making three attempts to fly the peacock attains its aim. Then there is no need for it to make attempts to fly again and again either. So, is it about the Confluence Age Krishna or the Krishna who takes birth in the Golden Age? It is about the Confluence Age Krishna.

समय – 11.58

जिज्ञासू – बाबा, हर धर्म की राजाई स्थापन करने के लिए प्रजापिता को जाना पड़ता है। तो प्रजापिता तो ठेठ सूर्यवंशी है वो तो जाता नहीं है। तो फिर.....

बाबा – सूर्यवंशी जो आत्मा होती है, वो हर धर्म की नहीं होती है लेकिन हर धर्म में सतोप्रधानता की स्टेज होती है। और वो सतोप्रधानता की स्टेज जितनी सूर्यवंश में होती है उतनी और कोई धर्म में नहीं होती है।

**Time: 11.58**

**Student:** Baba, Prajapita has to go to establish kingship in every religion. So, Prajapita is a real *Suryavanshi*; he does not go. Then....

**Baba:** The *Suryavanshi* soul does not belong to every religion but there is a *satopradhan* stage (consisting mainly in the quality of goodness and purity) in every religion. And no other religion has the *satopradhan* stage to the extent the *Suryavanshis* have.

जिज्ञासू – तो बाबा, प्रजापिता तो दूसरे-दूसरे धर्मों में जाता नहीं है।

बाबा – और-और धर्मों में प्रजापिता नहीं जाएगा तो कौन जाएगा? बाप के दस बच्चे हैं और दस बच्चों के अपने अलग-अलग परिवार चल रहे हैं। तो बाप बच्चों के घर नहीं जाएगा तो कहाँ जाएगा? वो तो बीज है जो हर धर्म में परिवर्तित होता जाता है जहाँ-जहाँ जाता है वहाँ राजाई स्थापन करने जाता है। ऐसे नहीं कनवर्ट होने जाता है।

**Student:** So, Baba, Prajapita does not go to the other religions.

**Baba:** If Prajapita won't go to the other religions then who else will go? If there are ten children of a father and if there are ten separate families of those ten children, then where else will the father go if not to his children's house? He is the seed, he goes into every religion. Wherever he goes, he goes to establish kingship. It is not as if he converts and goes to that religion.

जिज्ञासू – तो बाबा ने कहा है कि ये तो थुरभाग की आत्मा है।

बाबा – थुरभाग की आत्मा है तो अपने धर्म में पक्की रहती है। सिर्फ और धर्म वालों को राजाई देने की निमित्त है।

जिज्ञासू – बाबा ने तो मुरली में कहा है कि जो स्थापना करेगा, वो ही पालना करेगा, उसको ही विनाश करना पड़ेगा।

बाबा – करता है ना। जैसे इस्लाम धर्म है ईब्राहिम का और भारतवर्ष में उसकी राजाई चली मुगल सल्तनत। तो मुगल सल्तनत के रूप में वो बाबर के रूप में स्थापना भी करता है। शाहजहाँ के रूप में पालना भी करता है। और रंगीला रंग शाह के रूप में खलास भी कर देता है।

**Student:** So, Baba has said that this is a soul of the stem portion.

**Baba:** It is a soul from the stem portion; so, it remains firm in its religion. It is instrumental only to give kingship to the souls belonging to the other religions.

**Student:** Baba has said in the *Murli* that the one who establishes, he himself will sustain; he himself will have to cause destruction.

**Baba:** He causes (destruction), does he not? For example, the Islam religion of (founded by) Abraham and his rule continued in India in the form of Mughal Sultanate. So, he (i.e. Prajapita) establishes (kingship) in the form of Babar in the form of Mughal Sultanate. He

also sustains in the form of Shahjahan. And he destroys in the form of *Rangeela Rang Shah* as well.

जिज्ञासू – तो बाबा ये प्रजापिता की पर्सनालिटी राम बाप की पर्सनालिटी है?  
बाबा – और किसकी पर्सनालिटी होगी जो आदि, मध्य, अंत पार्ट बजाता है, बाप और बाप का बच्चा। आदि में भी नारायण। 16 कला सम्पूर्ण नारायण की मंदिरों में पूजा होती है। मध्य में भी राजा विक्रमादित्य सोमनाथ मंदिर की स्थापना करता है। गाइडेन्स देने वाला वो ही बाप है राम बाप। और अंत में भी सृष्टि का परिवर्तन करने के लिए दो ही आत्मायें निमित्त बनती है।

**Student:** So, Baba, is the personality of Prajapita the personality of the father Ram?

**Baba:** Who else's personality will play the part in the beginning, middle and end, the father and the father's child. He was Narayan in the beginning. The Narayan who is 16 celestial degrees complete is worshipped in the temples. Even in the middle, King *Vikramaditya* establishes the temple of Somnath. The same father Ram gives guidance and even in the end the same two souls themselves become instrumental in bringing about the transformation of the world.

जिज्ञासू – तो बाबा ऐसे तो फिर हर धर्म में एक-एक पार्ट बजाए तो आठ तियाँ 24 – 25 तो ये ही हो गए।

बाबा – आठ तियाँ चौबीस? 30-25 हो गए? आठ धर्म में राजाई चलती भी कहाँ है?

जिज्ञासू – बाबा, आठ धर्म में तो राजाई चलती है।

बाबा – राजाई तो सिर्फ सात में ही चलती है। जो आर्यसमाज है वो तो कोई धर्म ही नहीं है। मठपंथ है।

**Student:** So, Baba, in this way if he plays a part of (establishment, sustenance and destruction) each in every religion, then eight multiplied by three, just these make up twenty four, twenty five (births) .

**Baba:** Eight multiplied by three is twenty four? It is 30-25? Is there kingship in all the eight religions?

**Student:** Baba, there is kingship in eight religions.

**Baba:** Kingship is there only in seven (religions). *Aryasamaj* is not a religion at all. It is just a sect.

समय – 15.07

जिज्ञासू – बाबा कर्मातीत अवस्था का मुख्य पुरुषार्थ कौनसा है?

बाबा – कर्म से अतीत चले जाओ। कर्म करते रहो लेकिन उसका कोई फल न बने। माना मन-बुद्धि कर्म में न लगी रहे। जैसे महबूबा को महबूब याद करता है। कारखाने में काम करता रहता है। रास्ते में जाता है। आँखें खुली हुई होती हैं। महबूबा याद आती रहती है। दूसरे लोग सामने से निकल जाते हैं और उससे पूछा जाए कौन-कौन निकल गए। उसे याद ही नहीं रहता। आँखें भी इन्द्रियाँ हैं। आँखों ने खुले होते हुए भी क्यों नहीं देखा? क्या कारण हुआ? मन की स्थिति दूसरी जगह लगी हुई थी। इसीलिए कहते हैं – मन जीते जगत जीत। मन को कन्ट्रोल कर लिया तो सारी दुनियाँ को कन्ट्रोल कर लिया।



**Time: 15.07**

**Student:** Baba, what is the main *purusharth* (special effort for the soul) required for attaining the *karmaateet* stage (stage beyond the effect of actions)?

**Baba:** Go beyond the actions. Keep performing actions but it should not result in any results. It means that the mind and intellect should not remain busy in the actions. For example a lover remembers his beloved. He keeps working in the factory. He walks on the path, his eyes remain open. He keeps remembering his beloved. Other people pass in front of his eyes and if he is asked, who all passed before your eyes? He does not remember at all. The eyes are also organs. In spite of the eyes being open, why did he not see? What was the reason? The mind was busy somewhere else. That is why it is said, *man jeete jagat jeet* (the one who gains victory over the mind gains victory over the world). If you have controlled the mind, you have controlled the whole world.

मन दस इन्द्रियों का राजा है। दसों इन्द्रियों को कन्ट्रोल करने वाला है। मन आसक्त हो जाता है तो इन्द्रियाँ भी आसक्त हो जाती हैं। कर्मातीत अवस्था को पाना है तो मन को कन्ट्रोल करने की प्रैक्टिस यहाँ कराई जाती है जिसे कहते हैं राजयोग। ये राज है, सन्यासियों के लिए ये राज नहीं है। उनकी तो जन्मांतर की आदत पड़ी हुई है कर्म योग को छोड़ने की। लेकिन कर्म योग का मतलब ये नहीं कि चोरी-चकारी करो, डकैती करो।

Mind is the king of ten organs. It controls all the ten organs. If the mind becomes attached then the organs become attached as well. If you wish to achieve the *karmaateet* stage, then here you are made to practice controlling the mind which is called *Rajyog*. This is the secret (*raaz*). This secret is not for the *Sanyasis*. They have become habituated for many births to leave *karmayog*. But *karmayog* does not mean that you should steal or commit robbery.

**समय – 17.04**

जिज्ञासू – बाबा, ब्रह्मा ने कितने जन्म लिए?

बाबा – 84 जन्म। ये पूछने की बात है? एडवान्स लिया और एडवान्स तक आ गए। और बेसिक के प्रश्न पूछ रहे हैं। ब्रह्मा ने कितने जन्म लिए।

**Time: 17.04**

**Student:** Baba, how many births did Brahma take?

**Baba:** 84 births. Is it something to be asked? You obtained advance (knowledge); you reached the stage of advance (knowledge). And you are (still) asking questions of the basic knowledge as to how many births did Brahma take.

जिज्ञासू – बाबा, हमको नम्बर दे दें।

बाबा – नम्बर दे आपको?

जिज्ञासू – हम अकेले पड़ जाते हैं। हमें कौन मैसेज देवें?

बाबा – अकेले हैं तो और अच्छे हैं। अकेला जो है वो ज्यादा पुरुषार्थ करेगा या ढेर लोगों के बीच में रहने वाला ज्यादा पुरुषार्थ करेगा। एक शिव बाबा दूसरा न कोई।

**Student:** Baba, please give me your (phone) number.

**Baba:** Should I give number?

**Student:** I am left alone. Who will give me message?

**Baba:** If you are alone, it is better. Will a person who is alone do more *purusharth* or will someone living among lots of people do more *purusharth*? One Shivbaba and no one else.

जिज्ञासू – बाबा अब तुम आ गए तो हमे कोई कहने वाला नहीं है, कोई सुनने वाला नहीं है।

बाबा – तो क्या कहने की जरूरत?

जिज्ञासू – बाबा आ गए।

बाबा – हाँ तो बस ठीक है।

जिज्ञासू – ठीक है? तो हम कहाँ मिलें तुमसे। हम तो दूर हैं तो पांडव मैसेज दे देते हैं हमको।

बाबा – पूरी भरी हुई सभा में अपनी बातें नहीं करना चाहिए। ये स्वार्थ की बात हो गई। और ज्ञान की बातें पूछो।

**Student:** Baba, now that you have come, there is nobody to speak to me; there is nobody to listen to me.

**Baba:** So, what is the need to say anything?

**Student:** (To say that) Baba has come.

**Baba:** So, it is all right.

**Student:** Is it all right? So, where should I meet you? I live far away. So, the *Pandavas* give message to me.

**Baba:** You should not speak about personal things in a full gathering. This is selfishness. You can ask about the topics related to knowledge.

समय – 19.27

जिज्ञासू – बाबा, जैसे बताया है मुरली में कि कृष्ण का जन्म होगा, याने 36 में, तो छोटी इकाई होगी। माना छोटा परिवार होगा।

बाबा – छोटा परिवार होगा। हाँ।

जिज्ञासू – तो कितनी आत्मार्यें होंगी?

बाबा – अरे! जो सृष्टि शुरू होगी नई दुनियाँ की वो सम्पन्न 100% नई सृष्टि होगी या 99, साढ़े 99% नई सृष्टि होगी?

जिज्ञासू – 100% होगी।

Time: 19.27

**Student:** Baba, just as it has been said in the *Murli* that when Krishna takes birth, meaning in (20)36, there will be a small unit (of family). It means that there will be a small family.

**Baba:** There will be a small family. Yes.

**Student:** So, how many souls will exist?

**Baba:** Arey, will the world of the new world which will begin, be 100 percent new world or 99 percent, or will it be 99.5 percent new world?

**Student:** It will be 100 percent.



बाबा – तो 100% नई सृष्टि में 100% सम्पन्न आत्मायें होनी चाहिए या कोई अधूरी आत्मा भी होनी चाहिए?

जिज्ञासू – सम्पन्न।

बाबा – एकाध सजा खाने वाली आत्मा आ जाए तो नहीं चलेगा? चलेगा या नहीं चलेगा?

जिज्ञासू – नहीं चलेगा।

बाबा – नहीं चलेगा।

**Baba:** So, in the 100 percent new world, should there be 100 percent perfect souls or should there be any incomplete soul too?

**Student:** Complete.

**Baba:** Will it be ok if one or two such souls who suffer punishments are included? Will it be ok or not?

**Student:** It will not be ok.

**Baba:** It will not be ok.

जिज्ञासू – तो उस समय क्या 9 लाख आत्मायें तैयार हो जायेंगी?

बाबा – 9 लाख सजाएँ नहीं खाती हैं?

जिज्ञासू – खाएँगी धर्मराज की।

बाबा – तो 9 लाख की बात क्यों की? ऐसी आत्माओं का संगठन चाहिए जो धर्मराज का एक भी डंडा खाने वाली न हो।

जिज्ञासू – अष्टदेव हैं।

बाबा – पूरी सम्पन्न आत्माएँ इन्हें कहते हैं अष्टदेव। असल सूर्यवंशी।

**Student:** So, at that time, will the 9 lakh (900 thousand) souls become ready?

**Baba:** Do the 9 lakh souls not suffer punishments?

**Student:** They will suffer punishments of *Dharmaraj*.

**Baba:** So, why did you talk about the 9 lakh (souls)? There should be a gathering of such souls who do not suffer even a single beating of the stick of *Dharmaraj*.

**Student:** They are the eight deities (*Ashtadev*).

**Baba:** The completely perfect souls, are called the eight deities. (They are) the true *Suryavanshis*.

समय— 20.47

जिज्ञासू – बाबा जैसे भक्तिमार्ग में दिखाया है ना कि वसुदेव कृष्ण को टोकरी में रखकरके ले जाते हैं। तो यमुना उनको निकलने नहीं देती है। बहुत पानी भर जाता है। इसका मतलब क्या है?

बाबा – इसका मतलब ये है कि कोई बुद्धिरूपी टोकरी है। जिस बुद्धिरूपी टोकरी में कृष्ण की आत्मा विराजमान की जाती है। राम वाली आत्मा हुई बुद्धि। सूक्ष्मवतन के तीन तबक्के हैं। उन तीन तबक्कों में बुद्धि कौनसे तबक्के में है? तीसरा तबक्का है बुद्धि। और मन का तबक्का कौनसा है? ब्रह्मा। और संस्कार का तबक्का विष्णु। तो बुद्धिरूपी टोकरी में कृष्ण वाली आत्मा बैठती है।

**Time: 20.47**

**Student:** Baba, in the path of *bhakti* (devotion) it has been shown that *Vasudev* takes Krishna in a basket (placed on his head). So, the river *Yamuna* doesn't allow him to pass through; the river becomes full of water. What does it mean?

**Baba:** It means that there is a basket-like intellect in which the soul of Krishna is made to sit. The soul of Ram is the intellect. There are three sections of the subtle world. Among those sections, the intellect is in which section? The third section is intellect. And which is the mind's section? Brahma. And the section of *sanskar* is Vishnu. So, the soul of Krishna sits in the basket-like intellect.

जिज्ञासू – फिर यमुना नदी?

बाबा – और यमुना जो कोई नदी है। काली नदी। काले कर्म करने वाली। महाकाली के रूप में पार्ट बजाने वाली, जिसमें बड़े-बड़े मगरमच्छ रहते हैं। सात-सात नालों का गंदा जल आकरके उसमें मिलता है, दिल्ली में। वो गंद बहाने वाली नदी। वो कलियुग के अंत में गंद बहाने वाली बनती है। जिसमें नाले इकट्ठे होते हैं और वही नदी को भगवान आकर क्या बना देता है? यमुना का वो कंटा बना देता है जिसे स्वर्ग कहा जाता है। तो यमुना उमड़ेगी नहीं भगवान की तरफ?

जिज्ञासू – बुद्धिरूपी पैर में?

बाबा – बुद्धिरूपी टोकरी।

जिज्ञासू – नहीं, पैर छूती है।

बाबा – बुद्धि को ही पाँव कहा जाता है।

**Student:** Then (what about) the river *Yamuna*?

**Baba:** And the river *Yamuna* is a dark river, which performs dark actions, the one who plays the part of *Mahakali*, which is inhabited by big crocodiles. The dirty water of seven drains flows into it in Delhi. That is a river which carries dirt. She becomes the one who carries the dirt in the end of the Iron Age, into which the drains flow and what does God come and make that river? He makes it the banks of the river *Yamuna* which is called heaven. So, won't *Yamuna* rise towards God?

**Student:** In the feet-like intellect?

**Baba:** Basket-like intellect.

**Student:** No, it touches the feet.

**Baba:** The intellect itself is called feet.

समय – 22.43

जिज्ञासू – बाबा, जब काली जीभ निकालती है। तो शिवजी जाकरके चरणों में लेट जाते हैं।

बाबा – शिवजी थोड़े ही आकर चरणों में आकर लेट जाते हैं। जब देखते हैं कि महाकाली संघार करती हुई आ रही है। और इसने सारा ही संघार कर दिया। अब ये रुकने वाली नहीं है। और कोई से रुकने वाली नहीं है। तो खुद आकरके लेट जाते हैं ताकि उसको पता चले कि हमने किसकी छाती पर पाँव रख दिया। हमसे बड़ा अनर्थ हो गया। और रुक जाए। पञ्चाताप होने लगे।

**Time: 22.43**

**Student:** Baba, when *Kali* (a female deity) takes her tongue out, Shivji lies down at her feet.

**Baba:** Shivji does not come and lie down at the feet. When he sees that *Mahakali* is moving ahead causing destruction and she has destroyed everything. Now she is not going to stop and she cannot be stopped by anyone. Then he himself comes and lies at her feet so that she could know, whose chest she has stepped on; that she has committed a grave sin. And she stops [it], [and] starts repenting.

कोई कहे कि रोका क्यों नहीं। उनको तो भगवान का रूप कहा जाता है। तो रोका इसीलिए इसलिए नहीं, सामना इसलिए नहीं किया कि शंकरजी का खुद का ही काम क्या है? संघार करना। और संघार खुद न करके जिसको इशारा दिया उसने इशारे का पालन कर लिया। तो शक्तियाँ संघारकारणी बन गईं। तो शक्तियाँ अगर वो कार्य करती हैं। तो उनका विरोध करने की क्या दरकार? काम किसका किया? काम तो उनका ही किया। तो विरोध करने की तो बात ही नहीं। बाकि रोकना भी है। क्योंकि सृष्टि का बीजारोपण करने के लिए ये भी जरूरी है कि सारा ही लीन नहीं हो जाना चाहिए। सारा ही समाप्त हो जाए सृष्टि, तो फिर बचेगा कोई नहीं। कुछ आत्माएँ रहें इस सृष्टि पर। इसलिए उस विनाश के कार्य को रोकना जरूरी था। तो रोक दिया।

Someone may say, why didn't he stop her. He is in fact called God's form. So, he did not stop her, he did not confront her because, what is Shankarji's own task? To destroy. And instead of doing the destruction himself, if the person to whom he gives a hint (to cause destruction) obeyed the hint. So, the *shaktis* became destroyers. So, if *shaktis* perform that task, then what is the need to oppose them? Whose task did they perform? They performed his task only. So, there is no question of opposing at all. As for the rest, they have to be stopped. To sow the seed of the world it is also necessary that everything should not perish. If the entire world perishes then nobody will be left. Some souls should remain in this world. That is why it was necessary to stop that task of destruction. So, he stopped it.

**समय – 24.57**

जिज्ञासू – बाबा, शिवलिंग को जलाधारी में रखे क्यों दिखाते हैं?

बाबा – माँ और बाप की निशानी दिखाई गई है। बाप, कैसे पता चले ये बाप है? जैसे चित्रकार होते हैं ना, तो चित्र बनाते हैं। तो चित्रों में ऐसी बात दिखाते हैं कि जो देखने से ही पता चल जाए कि ये बाप है और ये अम्मा है। अगर नाक दिखा दें, तो नाक तो अम्मा को भी होती है और बाप को भी होती है। कान दिखा दें, तो कान अम्मा को भी है और बाप को भी है। आँख दिखा दें, आँख अम्मा को भी है, बाप को भी है। कुछ पता नहीं चलेगा। इसलिए क्या दिखाया? जलाधारी दिखाई।

**Time: 24.57**

**Student:** Baba, why is *Shivling* shown to be placed on a *jalaadhaari*?

**Baba:** It is a sign of the mother and the father that has been depicted. How can we know that he is the father? For example, there are painters, aren't there? They paint pictures. So, they show such thing in the pictures which can be understood just by seeing it that this is the father and this is the mother. If they show the nose, then a mother as well as the father has a nose. If they show the ear, then a mother as well as the father has ears. They may show eyes. The mother as well as the father has eyes. We won't come to know anything. That is why what has been shown? A *jalaadhaari* (female organ) has been shown.

जल का आधार लिया हुआ है। ये ज्ञान जल का आधार लेने वाली शक्तियाँ ही होती हैं। वो ही ज्ञान को धारण करती हैं। बाकि पुरुष तो सब दुर्योधन, दुःशासन है। वो ज्ञान धारण नहीं करते। अज्ञान धारण कर लेते हैं। इसलिए जलाधारी के रूप में किसको दिखाया है। स्त्री जाति को, माता को। और पिता को पिता के रूप में दिखाया है। ये दोनों मिलकरके जो सृष्टि उत्पन्न करते हैं। उन सृष्टि उत्पन्न करने वालों में सर्वोपरि जिन्होंने पार्ट बजाया, उनका नाम शंकर पार्वती रख दिया।

The support of water (*jal*) has been taken. Only the *shaktis* are the ones who take the support of the water of knowledge. They alone imbibe the knowledge. As regards the men, all are *Duryodhans* and *Dushasans*. They do not imbibe knowledge. They take in ignorance. That is why, who has been shown in the form of *jalaadhari*? The womenfolk, the mother (has been shown). And the father has been shown in the form of a father (male organ). Both of them together create the world. They are the ones who played the highest role among those who create the world. They were named as Shankar Parvati.

शंकर में वो निराकारी लिंग रूप शिव प्रवेश करता है। जो शिव कल्याणकारी कहा जाता है। वो कल्याणकारी शिव का नाम सिर्फ शंकर के साथ जोड़ा जाता है। और कोई के साथ नहीं जोड़ा जाता है। माना इस सृष्टि में, जो कामेन्द्रिय है उस कामेन्द्रिय को भी जीतने का कार्य करने वाला वो शिव है। मनुष्य कामी होते हैं। देवतायें निष्कामी होते हैं। इन्द्रियों से सुख भोगने की आस मनुष्यों की होती है। देवताओं को कोई ऐसी इच्छा नहीं होती है। लेकिन उन इच्छाओं के ऊपर, वासनाओं के ऊपर विजय प्राप्त करना शिव आकरके सिखाते हैं। शिव ने आकरके इस सारी सृष्टि के मनुष्यों को इच्छामात्रम् अविद्या बनाया। अब कोई एक जन्म के लिए बनते हैं, थोड़े समय के लिए बनते हैं। और कोई जन्म-जन्मांतर के लिए बनते हैं। देवआत्माओं ने 21 जन्मों के लिए प्राप्ति की।

That incorporeal *ling*-form of Shiv, who is called benevolent Shiv, enters in Shankar. That benevolent Shiv's name is prefixed only with Shankar. It is not prefixed with anyone else. It means that in this world, it is Shiv who performs the task of conquering the organ of lust. Human beings are lustful. Deities are selfless. The desire to enjoy pleasures through the organs is in human beings. Deities do not have any such desire. But Shiv comes and teaches us to gain victory over those desires, those lustful tendencies. Shiv came and made the human beings of the whole world *ichcha maatram avidya* (without the trace of knowledge of desire.) Well, some become (*ichcha maatram avidya*) for one birth. Some become for some time. And some become for many births. Deity souls achieved attainments for 21 births.

तो ये मात-पिता का रूप है। वास्तव में एक है आत्माओं का पिता, शिव। वो सदैव निराकार है। और एक है मनुष्यों का पिता, जो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर ऑलराउन्ड पार्ट बजाने वाला सदा साकार है; परंतु वो निराकार शिव जब तक साकार में मुकरर रूप से प्रवेश न करे, तब तक इस रहस्य को समझाय नहीं सकता कि इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना कैसे होता है? और कौन ये राजयोग सिखाए सकता है। एक परमपिता परमात्मा शिव के सिवाए और कोई भी सम्पूर्ण राजयोग नहीं सिखाए सकता। सब नीचे गिराने वाले हैं। पद नीचा कराए देंगे। ऊँचा उठाने वाला एक ही शिव बाप है।

So, this is a form of the mother and the father. Actually, one is the Father of the souls, i.e. Shiv who is always incorporeal and the other is the father of the human beings, who plays an all-round part on this stage-like world; he is always corporeal, but until the incorporeal Shiv enters in the corporeal in a permanent way, He cannot explain the secret, how can one gain victory over the organs? Who else can teach this *Rajyog*. Except one Supreme Father Supreme Soul Shiv nobody can teach complete *Rajyog*. Everyone causes downfall. They will cause our post to decline. Only one Father Shiv is the one who raises us high.

समय – 30.04

जिज्ञासू – बाबा, जगदम्बा का तामसी रूप काली का है। फिर काली को भी चार भुजा दिखाते हैं।

बाबा – चार भुजा? सैंकड़ों भुजायें दिखाते हैं। उनकी भुजाओं की गिनती नहीं है। जितनी ब्रह्मा की भुजायें होती हैं, उससे ज्यादा भी महाकाली की भुजायें हैं। रुद्र माला में जितने भी स्त्री चोले हैं। उनकी मुखिया कौन है? जगदम्बा। तो बाकी भुजायें सब महाकाली की भुजायें हो गईं ना।

जिज्ञासू – तो भक्तिमार्ग में तो सिर्फ चार ही भुजाएँ दिखाते हैं।

बाबा – महाकाली को चार भुजायें नहीं दिखाते हैं। ढेर भुजायें दिखाते हैं। टाँगे सिर्फ दो दिखाते हैं।

**Time: 30.04**

**Student:** Baba, the degraded (*tamasi*) form of *Jagadamba* is *Kali*. Then, *Kali* is also shown to have four arms.

**Baba:** (Just) four arms? She is shown to have hundreds of arms. Her arms are uncountable. *Mahakali* has more arms than Brahma. Who is the head of all the female bodied (souls) of the *Rurdramala* (the rosary of *Rudra*)? *Jagadamba*. So, all the remaining are the arms of *Mahakali*, aren't they?

**Student:** So, only four arms are depicted in the path of *bhakti* (devotion).

**Baba:** *Mahakali* is not shown to have just four arms. She is shown to have numerous arms. She is shown to have just two legs.

समय – 31.03

जिज्ञासू – बाबा, भीलनी का मिसाल क्या है?

बाबा – हाँ-हाँ, भीलनी ने भी इतना प्यार दिखाया कि भल जूठे बैर खिलाए; लेकिन प्यार से भरे हुए थे। तो भगवान तो प्यार के भूखे हैं कि देखो ये हमको मीठा-मीठा खिलाती है। ऐसा न हो कोई कड़वाहट भगवान के जीभ में पहुँच जाए। भावना की बात है ना। भाव के भूखे हैं भगवान।

**Time: 31.03**

**Student:** Baba, what is the example of the tribal woman (*bhilni*)?

**Baba:** Yes, yes, the tribal woman also expressed so much love (for God) that although she gave (Ram) *Ber* (small plum-like) fruits tasted by her, they were full of her love. So, God is only hungry for love: look, she feeds Me with sweet (fruits). It should not happen that the bitterness reaches the tongue of God. It is a subject of feelings, isn't it? God is hungry for feelings.

समय – 31.46

जिज्ञासू – बाबा, ये बताए हैं कि असुरों और देवताओं ने मंथन किया और असुरों और देवताओं की लड़ाई लगी। तो असुर तो होते ही है कलियुग में और देवतायें तो होते ही है सतयुग में। कैसे संबंध जुड़ेगा?

बाबा – संगमयुग में ही कोई आसुरी आत्मायें हैं, इशारे से नहीं समझती हैं और कोई देव आत्मायें हैं जो इशारे से समझती हैं। हैं सब मनुष्य ही इस दुनियाँ में, संगम में। लेकिन दो प्रकार के हैं। एक सतयुग के पहले जन्म में देवतायें बनने वाले हैं और दूसरे वो हैं जो सतयुग के आदि जन्म में नहीं पहुँचेंगे, 84 जन्म नहीं लेंगे। वो कम जन्म लेने वाले बनेंगे। परिपूर्ण आत्मा नहीं बनेंगे, खण्डित आत्मा बनेंगे। और खण्डित आत्मा होने के कारण द्वापर युग से दूसरे धर्मों में कनवर्ट हो जाएगी। तो दो प्रकार की आत्मायें हो गईं। एक शुद्ध देव आत्मा और दूसरी कनवर्ट होने वाली दानव आत्मा। दैत्य आत्मा। तो दोनों में ये युद्ध दिखाया गया है।

**Time: 31.46**

**Student:** Baba, has said that deities and demons churned (the ocean) and the demons and the deities fought a war with each other. So, the demons are in the Iron Age and the deities are in the Golden Age. How can we co-relate both of them?

**Baba:** In the Confluence Age itself there are some demoniac souls, who do not understand hints and there are some deity souls, who understand hints. All are indeed human beings in this world in the Confluence Age. But they are of two kinds. One kind are those who are going to become deities in the first birth of the Golden Age and the second kind are those who will not reach the first birth of the Golden Age. They will not take 84 births. They will take lesser number of births. They will not become perfect souls, they will become impaired souls. In addition, due to being impaired souls, they will convert to the other religions from the Copper Age. So, there are two kinds of souls. One is purely deity souls and the second are the demoniac souls who convert. The demoniac souls. So, this war has been depicted between both of them.

.....  
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.